PROSPECTUS

विवरणिका

20 -20

NMD Bedi Mahila Shikshak Prashikshak Mahavidhalya
Anupgarh

माता मोहन देवी बेदी महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय

अनूपगढ़, जिला श्री गंगानगर (राज.) दूरभाष : 01498-252220

स्व. माता मोहन देवी बेदी

प्राचार्य सन्देश

प्रिय छात्राध्यापिकाओं,

भविष्य में बेहतर जीवन के लिए प्रयास करते रहना चाहिए, यदि कोई व्यक्ति उन सपनों को प्राप्त करने के लिए सपने देखना और संघर्ष करना बन्द कर देता है, तो जीवन निरर्थक हो जाता है। सफलता आपके लिए चाँदी की थाली में नहीं आती, कड़ी मेहनत, प्रतिबद्धता और समर्पण हमें सफलता के करीब लाता है।

माता मोहन देवी बेदी महिला टीचर ट्रेनिंग कॉलेज, अनूपगढ़ राजस्थान की शिक्षक शिक्षा के प्रमुख संस्थानों में से एक है। यह बी.एड कार्यक्रम आयोजित करने वाले सबसे पुराने कॉलेजों में से एक है। इसका उद्देश्य कुशल शिक्षक तैयार करना है। कॉलेज के आदर्श वाक्य ''हम बच्चों के लिए जीते हैं'' एक शिक्षक के जीवन को प्रस्तुत करते हैं। बच्चे राष्ट्र का भविष्य हैं और एक शिक्षक के पास अपनी प्रतिभा को पोषित करने, अपने चरित्र का निर्माण करने और उन्हें देश के उपयोगी और उत्पादक नागरिक बनाने की जिम्मेदारी है।

कॉलेज में शानदार इमारत, विशाल लॉन, अच्छी तरह से सुसज्जित प्रयोगशालाएं और एक समृद्ध पुस्तकालय है। कॉलेज का स्टॉफ अत्यधिक योग्य और समर्पित है। कॉलेज छात्रों के व्यक्तित्व के सांमजस्यपूर्ण विकास का लक्ष्य रखता है और सीखने के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करता है। यह मूल्य आधारित शिक्षा पर जोर देता है और परंपराओं को बढ़ाता है। कॉलेज ने सफलता के कई मील के पत्थर को कवर किया है और समाज को प्रेरित और अनुकरणीय शिक्षक प्रदान करने की एक प्रतिष्ठा है।

हमारे कॉलेज के दिल में सही उपलब्धि बनाने के लिए दृष्टिकोण था, जिसे हम अपने लोकाचार का हिस्सा बनाने के लिए लगातार प्रयास करते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी होने के नाते, हमने यह सुनिश्चित करने के लिए हमारी गतिविधियों पर लगातार निगरानी रखी है कि सर्वोत्तम शैक्षणिक मानकों को बनाए रखा जाए, हमने एक प्रतिष्ठा स्थापित की है और इसे बनाए रखना है।

हम अपने छात्रों को समाज की चुनौतियों का सामना करने के लिए पर्याप्त कौशल, ज्ञान और दृष्टिकोण प्रदान करना जारी रखना चाहते हैं।

उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ।

(डॉ. गणेश शर्मा)

प्राचार्य

सचिव सन्देश

स्वर्गीय माता मोहन देवी जी बेदी के 'शिक्षा प्रेम' को और अधिक साकार बनाने के लिए अनूपगढ़ क्षेत्र की बालिकाओं को उच्च शिक्षाके क्षेत्र में अवसर प्रदान करने हेतु माताजी के नाम से अनूपगढ़ में 1997 में 'माता मोहनदेवी बेदी कन्या महाविद्यालय' की स्थापना कीगई। जो आज बालिकाओं को स्नातक स्तर की शिक्षा देते हुए आस-पास के क्षेत्रों को शिक्षा की ज्योति से प्रकाशित कर रहा है।

उत्कृष्ट शिक्षा के इन्हीं प्रयासों को आगे बढ़ाते हुए इस महाविद्यालय ने महिलाओं की शिक्षा के साथ-साथ उन्हें रोजगारोन्मुखी शिक्षा प्रदान करने की तरफ भी प्रयास किया और ''मातामोहन देवी बेदी महिला शिक्षक प्रशिक्षण (बी.एड) महाविद्यालय'' की स्थापना के लिए राज्य सरकार से मान्यता प्राप्त की। सत्र 2006-07 से नियमित कक्षाएँ प्रारम्भ की जा चुकी है।

इस शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय की स्थापना से बालिकाओं को रोजगार पूरक शिक्षा तो मिलेगी ही, साथ ही यहाँ से प्रशिक्षित छात्राएँ आस-पास के अन्य क्षेत्रों में शिक्षा ज्योति को आगे प्रज्ज्वलित कर माताश्री के स्वप्न को साकार करेंगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

उपर्युक्त सभी कार्यों के पीछे बेदी परिवार के साथ-साथ क्षेत्रवासियों के त्याग, परिश्रम एवं निष्ठापूर्वक सहयोग का बड़ा हाथ है, जो हमें हर मुश्किल कार्य को भी सफलतापूर्वक सम्पादित करने की प्रेरणा प्रदान करता है।

(वरूण बेदी)
सचिव

प्रेरणा सूचक शब्द

सा विद्याया विमुक्तये

सृष्टि की रचना के साथ ही यह तथ्य स्पष्ट हो गया कि विभिन्न प्राणियों में मानव एक अतिरिक्त शक्ति से सम्पन्न है। कालान्तर में अपनी इस विशिष्ट शक्ति का प्रयोग करते हुए उससे समस्त प्राणियों पर अपनी श्रेष्टता भी साबित की।

मनुष्य अपनी प्रज्ञा के बल पर, विवेक शक्ति के आधार पर स्वंय को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करता है। यही प्रज्ञा या विवेक जाग्रत करने की कामना बौद्धिक साहित्य काल से की जा रही है। ऋग्वेद के एक श्लोक में भी कहा गया है, जो ज्ञानोदय के लिए प्रयत्नशील है, उसकी बुद्धि, विवेक और अन्तर दृष्टि को तीक्षणता प्रदान की।

शिक्षा व्यक्ति व समाज दोनों का विकास करने वाली शक्ति के रूप में जाना जाता है, सिखना व सिखाना चाहे सांसारिक ज्ञान से सम्बद्ध हो अथवा आध्यात्मिक ज्ञान से इसकी प्रक्रिया जिस मार्ग से पूर्णता प्राप्त करती है। वह शिक्षा का पथ है, विवेक अथवा ज्ञान शब्दों का प्रयोग इसके पर्याय के रूप में किया जाता है। शिक्षा शब्द संस्कृत की शिक्ष् धातु से बना है, जिसका अर्थ है सीखना तथा प्रेरक के रूप में अर्थ सिखाना।

यथार्थ रूप में शिक्षा व्यक्ति को अपनी अन्तःशक्ति को पहचानने में सामर्थ्य प्रदान करती है। यह शिक्षा कठोर प्रशिक्षण एवं अनुशासन द्वारा हमारी प्रकीणता एवं प्रतिभा को न केवल प्रोत्साहित करती है अपितु विकसित करती है। यह निष्पादन और तर्कसंगत तरीके से चिन्तन करने की प्रशिक्षण देती है। वास्तविक शिक्षा चरित्र निर्माण करती है और समाज में सृजनशील व्यक्ति के रूप में निर्वाह करने में हमारी सहायता करती है।

शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारती है, व्यक्ति का नैतिक उत्थान कर उसमें मानवीय गुणों को विकसित करती है। व्यक्ति को भावी जीवन हेतु सक्षम बनाती है व सामाजिक नियमों की जानकारी प्रदान कर एक सामाजिक प्राणी बनाती है।

श्रीमती किरणलता
(असि. प्रोफेसर)

प्रेरणा सूचक शब्द

माँ शारदा के इस पावन मन्दिर
माता मोहन देवी बेदी महिला शिक्षक
प्रशिक्षण महाविद्यालय में सभी छात्राध्यापिकाओं
का हार्दिक अभिनन्दन व शुभकामनायें !

पिछले कई सत्रों से महाविद्यालय के गौरवपूर्ण इतिहास को देखते हुए आपने जिस आशा व आकांक्षा से इस महाविद्यालय में प्रवेश लिया है, उसी तन्मयता एवं एकाग्रचितता से अपना बी.एड का पाठयक्रम कर्मठता से व अध्ययनशीलता से अनुशासन में रहते हुए नैतिकता का पूर्ण रूप से पालन करते हुए और राष्ट्र की उन्नति में योगदान देने के लिए आप सदैव तत्पर रहे हमारी संस्था का यही उद्देश्य है और हम इस उद्देश्य को पूर्ण करने में सदैव प्रयासरत रहेंगे।

हमारी संस्था का उद्देश्य न केवल मानसिक व शारीरिक क्षमताओं का विकास करना है बल्कि आपके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करते हुए आपका सर्वांगींण विकास करना है।

आजकल के आधुनिक युग में जहाँ नैतिकता के बदले भौतिकता को प्राथमिकता दी जाती है। मानवता का हनन किया जाता है, हमारी संस्था उस हनन से समाज को उभारकर एक नये पथ पर अग्रसर होने के लिए एक नये समाज के निर्माण के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है।

आप सौभाग्यशाली हैं कि आपको ऐसी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए इस महाविद्यालय में प्रवेश मिला है। महाविद्यालय में आने वाली छात्राएं अतीत का इतिहास है। वर्तमान का आईना भविष्य के उज्ज्वल पक्ष की आकांक्षी है, अत: हम कामना करते हैं कि महाविद्यालय की छात्राध्यापिकाएं रचनात्मक व क्रियाशील दिशा व कर्म में सांमजस्य स्थापित करते हुए महाविद्यालय की श्रेष्ठ परम्पराओं का निर्वाह करते हुए ऊँची बुलन्दियों की ओर अग्रसर होंगी।

श्रीमती पायल चुघ
(असि. प्रोफेसर)

A Step ahead education (Women Empowerment)

"Let's remember one book, one pen, one child and one teacher can change the world"
- (Malala Z Yousufzai)

We, The M.M.Dian's are creating the new teachers with great enthusiasm, By passing year & year a lot of students (interans) had completed their B.Ed. Course and get skilled in it and achieved their goal. Their bright future makes a bright world of education.

Since 2006, We built a new era of which teaching is not only a profession but it becomes to change the education system. The girls trainees works in this field with zeal and zest, the way they can get their goal as they want.

If we talk about the leadership of M.M.Dian's the principal sir as well as the staff is very labourious and skilled who try their best of develop an environment for students in which they feel comfortable in their training session.

We all M.M.Dian's ever ready to empower the girls who are undertraining and get them ready to their life. We strongly feel that every girl had to power to take her own decisions and learns own basis for life time.

It is saying that

"Feminism isn't about making women strong. Women are already strong it's about changing the way world percieves that strength"

Smt. Shalini Chhabra
Asst. Prof.

महाविद्यालय परिचय

अनूपगढ़ क्षेत्र श्री गुरूनानक देव जी महाराज के वंशज बाबा हर सिंह जी बेदी की तपोस्थली एवं कर्मस्थली रहा है। इस क्षेत्र में श्री गुरूनानक देव जी के अंश-वंश बेदी परिवार द्वारा आध्यात्मिक उत्थान के लिए तथा क्षेत्रवासियों को सुसंस्कृत एवं परिमार्जित बनाने के लिए तो सैंकड़ो वर्षो से प्रयत्न किये जाते रहे हैं, और इलाके में घूम-घूम कर इनको श्री गुरूनानक देव जी के बताये रास्ते पर चलने के लिए प्रेरणा देते रहे, जागृत करने का प्रयास करते रहे, अपने चमत्कारों से विभिन्न अवसरों पर आश्चर्यचकित करते रहे, गुरूमहिमा का गुणगान सुनाते रहे परन्तु शिक्षा के प्रचार की ओर उनका ध्यान 31 वर्ष पहले ही गया जब उन्होंने यहां एक प्राथमिक स्कूल की स्थापना की, जो वर्तमान में प्रगति करते हुए बाबा हरसिंह बेदी मैमोरियल सीनियर सैकेण्डरी स्कूल के नाम से संचालित है यद्यपि बाबा भीम चन्द जी बेदी जो गुरूनानक देव जी के 14 वें वंशज थे। शिक्षा प्रचार को महत्वपूर्ण समाजिक प्रक्रिया मानते थे परन्तु ठोस विचार माता मोहन देवी जी के दिमाग की उपज थी। जब उन्होंने बालिका शिक्षा को सामाजिक प्रगति का एक आवश्यक अंग मानना प्रारम्भ किया। उन्हीं के विचारों को मूर्त रूप देने का बीड़ा उनके सेवकों, भक्तों एवं परिवारजनों ने उठाया। बाबा राजकुमार जी बेदी एवं बाबा सुरेन्द्र कुमार जी बेदी के गत्यात्मक व्यक्तित्व, प्रभाव, लग्न एवं निष्ठा के कारण बालिका शिक्षा के क्षेत्र में एक कन्या महाविद्यालय की स्थापना 1997 में करके एक नया आयाम स्थापित किया, जो आज अपने अलौकिक प्रकाश से अज्ञानता का अंधेरा दूर करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। जुलाई 1997 में केवल 45 छात्राओं का प्रवेश करके अध्यापन प्रारम्भ किया गया। इसके पश्चात् बाबा राजकुमार जी बेदी के संरक्षण एवं निर्देशन में संस्था अध्यक्ष, प्रबन्ध समिति, सचिव व समर्पित सहयोगियों के निरन्त प्रयासों से इस कन्या

महाविद्यालय परिचय

महाविद्यालय को 1998 में विश्वविद्यालय की ओर से परीक्षा केन्द्र के रूप में स्वीकृति मिल गई एवं सत्र 2006-07 से बी.एड महाविद्यालय की स्थापना कर शिक्षा के क्षेत्र में नया अध्याय जोड़ दिया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि छात्राऐं उच्च शिक्षा ग्रहण करके महाविद्यालय के साथ-साथ इस क्षेत्र का भी नाम रोशन करेंगी। महाविद्यालय में पर्याप्त भवन, फर्नीचर, चार वाटर कुलर, ट्यूबवैल, पुस्तकालय, जलपान गृह आदि की स्थापना करके अनेक सुविधायें उपलब्ध करवाई गई हैं।

क्षेत्रवासियों से सहयोग की आशा में

आचार संहिता व अनुशासन

माता मोहनदेवी जी बेदी के नाम से संस्थापित इस महाविद्यालय में उच्च स्तर का आचरण, अनुशासन का पालन एवं पारस्परिक व्यवहार में शालीनता की दीर्घकालीन परम्परा है, और संस्था से सम्बन्धित प्रत्येक छात्रा से अपेक्षा की जाती है कि वह महाविद्यालय परिसर तथा उसके बाहर सब स्थानों पर उच्च स्तर के राष्ट्रीय एवं व्यक्तिगत आचरण एवं अनुशासन के नियमों का पालन करते हुए संस्था की गौरव-गरिमा की वृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहें।

महाविद्यालय में अनुशासनहीनता, उद्दण्डता, दुर्व्यवहार, मारपीट या हिंसा आदि के आरोपों के लिए छात्रा को विश्वविद्यालय की वार्षिक परीक्षा में बैठने से रोकने का अधिकार प्राचार्य को है। छात्रा को विश्वविद्यालय परीक्षा में बैठने दिया जाये या नहीं, इसका निर्णय करने का मुख्याधार अनुशासन का पालन एवं कक्षा में उपस्थिति होगी।

कक्षा में शान्तिपूर्वक बैठकर अध्ययन करें तथा व्याख्याताओं की आज्ञा और निर्देशों का पालन करें। कक्षा में अनुपस्थित किसी भी छात्रा की उपस्थिति ना बोलें। कक्षा में फर्नीचर को यथास्थान पड़े रहने दें तथा इधर-उधर ना करें।

कक्षा में अध्ययन के दौरान किसी छात्रा को बाहर न बुलावें। अत्यावश्यक होने पर प्राचार्य से अनुमति लेकर कर्मचारी के माध्यम से बुलावें। कोई भी छात्रा अध्ययन के समय कक्षा छोड़कर नहीं जायेगी।

महाविद्यालय के समस्त व्याख्याताओं, प्राचार्य, कर्मचारियों के प्रति आपका व्यवहार समुचित एवं संतोषपूर्ण होना चाहिए।

याद रखिए! आपका आचरण एवं व्यवहार ही महाविद्यालय की प्रतिष्ठा एवं गौरव का जीवन्त प्रतीक है।

सामान्य नियम

प्रवेश अस्वीकृति

(क) ऐसी अभ्यर्थी जिसने प्रवेश हेतु प्रस्तुत आवेदन-पत्र में कोई तथ्य जान बूझकर छिपाया हो अथवा मिथ्या प्रस्तुत किया हो।

(ख) ऐसी अभ्यर्थी जिसने आवेदन-पत्र जमा कराने की घोषित अंतिम तिथि तक महाविद्यालय में शुल्क जमा नहीं कराया हो।

(ग) ऐसी अभ्यर्थी जिसने आवेदन पत्र जमा करने की घोषित अंतिम तिथि तक आवेदन-पत्र प्रस्तुत नहीं किया हो अथवा अपूर्ण आवेदन पत्र प्रस्तुत किया हो।

(घ) ऐसे अभ्यर्थी जिसने महाविद्यालय में प्रवेश पाने के लिए अनुचित साधनों का प्रयोग किया हो, जैस रिश्वत अथवा आंतक आदि।

(ड़) ऐसे अभ्यर्थी जो पूर्व वर्षो में किसी बड़े दुराचार/दुर्व्यवहार की आरोपी रही हो या विश्वविद्यालय परीक्षा काल में अवचार की दोषी रही हो।

(च) परीक्षा में अनुचित साधनों के प्रयोग के लिए बोर्ड अथवा विश्वविद्यालय द्वारा जिसको दण्डित किया गया हो।

(छ) ऐसी अभ्यर्थी जिसके विरूद्ध किसी शैक्षणिक अथवा अशैक्षणिक कर्मचारी के साथ परिसर के बाहर हिंसात्मक व्यवहार करने को अपराधिक मामला न्यायपालिका में विचाराधीन हो।

(ज) ऐसी अभ्यर्थी जो न्यायालय के द्वारा नैतिक कदाचार अथवा इसी प्रकार के अन्य अपराध के कारण दोषी ठहराई गई हो।

(झ) ऐसी अभ्यर्थी जो प्रवेश प्रक्रिया के समय किसी शैक्षणिक/अशैक्षणिक कर्मचारी के साथ दुराचार/दुर्व्यवहार अथवा गाली गलौच करने की दोषी हो।

(ट) अभ्यर्थी के किसी अवांछनीय आचरण के कारण।

(ठ) प्रवेश हेतु उपलब्ध न होने के कारण।

(ड) ऐसी अभ्यर्थी जिसका प्रवेश सम्बद्ध विश्वविद्यालय के अन्तर्गत स्वीकार्य न हो।

प्रवेश नियम

विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित पी.टी.ई.टी. परीक्षा के माध्यम से सफल विद्यार्थियों को बी.एड परीक्षा में प्रवेश दिया जाता है। प्रवेश व आरक्षण सम्बन्धी नियम राजस्थान सरकार व विश्वविद्यालय द्वारा दिये जाते हैं।

माध्यम

महाविद्यालय में हिन्दी के साथ सुविधानुसार अंग्रेजी माध्यम से भी शिक्षण की व्यवस्था का प्रयास किया जाता है किन्तु हिन्दी के अतिरिक्त किसी एक विशेष भाषा के माध्यम से अध्यापन व्यवस्था करने के लिए महाविद्यालय बाध्य नहीं हैं।

महाविद्यालय समय

महाविद्यालय में कक्षाएं प्रारम्भ होने का निम्न समय निर्धारित है :-

प्रातः 9 बजे से सांय 4 बजे तक

सभी छात्राओं को महाविद्यालय की समय-सारिणी के अनुसार अध्ययन के लिए उपस्थित होना होगा, इस सम्बन्ध में विशेष कारण होने पर प्राचार्य को समय परिवर्तन का अधिकार होगा। महाविद्यालय का समय सत्र प्रारम्भ होने पर सूचना पट्ट पर लगा दिया जायेगा।

परिचय-पत्र

महाविद्यालय में प्रवेश प्राप्त प्रत्येक छात्रा के लिए परिचय-पत्र रखना अनिवार्य है। छात्रा को प्रवेश शुल्क जमा कराते समय परिचय-पत्र प्राप्त कर अपना आवक्ष चित्र चिपका, सम्पूर्ण प्रविष्टियों को भर प्राचार्य से प्रमाणित करा लेना चाहिए। आवश्यता पड़ने पर इसे दिखाना अनिवार्य होगा।

छात्राध्यापिकाओं के लिए आवश्यक दिशा निर्देश व जानकारी

1. महाविद्यालय/विश्वविद्यालय सम्बन्धी सूचनाओं की जानकारी का माध्यम सूचना पट्ट होगा। अतः उसे सभी छात्राध्यापिकाएं नियमित रूप से पढ़े।

2. आपका मुख्य ध्येय विद्यार्जन है अतः कक्षा में समय पर और नियमित रूप से उपस्थित हो केवल उन्ही छात्राओं को परीक्षा में बैठने की अनुमति दी जायेगी, जिनकी प्रत्येक विषय में 80 प्रतिशत उपस्थिति होगी।

3. महाविद्यालय में 7 दिन बिना सूचना दिये अनुपस्थित रहने पर नाम काट दिया जाएगा, जिसकी सूचना, सूचना पट्ट पर लगा दी जायेगी।

4. उपस्थिति की गणना प्रथम उपस्थिति सत्र के दिन से ही प्रारम्भ हो जायेगी।

5. महाविद्यालय ज्ञान साधना का पुनीत केन्द्र है, अतः महाविद्यालय की गरिमा एवं मर्यादा किसी रूप से कम न हो, इसका ध्यान रखना आपका सर्वोपरि कर्त्तव्य है, महाविद्यालय परिसर में किसी प्रकार की अनुशासनहीनता दण्डनीय है।

6. जो व्याख्याता आपको पढ़ाते हैं, उनका अभिवादन करना आपका कर्तव्य है। आपका व्यवहार शालीनतापूर्वक होना चाहिए। महाविद्यालय के अन्य स्टॉफ के प्रति भी आपका व्यवहार शालीन, विनम्रतापूर्ण एवं आदरपूर्ण होना चाहिए। आपको किसी प्रकार की असुविधा या शिकायत हो तो आप सीधे प्राचार्य से सम्पर्क कर सकती हैं।

7. सभी छात्राध्यापिकाओं को निर्देशित किया जाता है कि प्रवेश के समय दिये गये सम्पर्क सूत्र (फोन नं.) में किसी प्रकार का परिवर्तन या बदलाव नहीं करेंगी।

8. महाविद्यालय के वार्षिक समारोह में महाविद्यालय की सर्वश्रेष्ठ छात्रा को पुरस्कृत किया जायेगा।

9. राष्ट्रीय पर्व स्वतन्त्रता दिवस व गणतन्त्र दिवस पर प्रत्येक छात्रा को ध्वजारोहन के समय महाविद्यालय में उपस्थित रहना अनिवार्य है, अनुपस्थित रहने पर छात्रा के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्यवाही की जायेगी। अन्य आयोजन भी महाविद्यालय में बड़े उल्लास के साथ आयोजित किये जाते हैं, जिनमें बाबा राजकुमार बेदी के सानिध्य में दीपावली के बाद धार्मिक समागम व मेला, वाद-विवाद प्रतियोगिता, हिन्दी दिवस आदि मुख्य हैं।

पारितोषिक प्रदान कर सम्मानित किया जायेगा।

प्रार्थना

दया कर दान

दया कर दान भक्ति का हमें परमात्मा देना
दया करना हमारी आत्मा में शुद्धता देना
1. हमारे ध्यान में आओ, प्रभु आँखों में बस जाओ
अंधेरे दिल में आकर के परम ज्योति जगा देना, दया कर .....
2. हमारा कर्म हो सेवा हमारा धर्म हो सेवा
सदा ईमान हो सेवा व सेवक जन बना देना, दया कर .....
3. बहा दो प्रेम की गंगा, दिलों में प्रेम का सागर
हमें आपस में मिलजुल कर प्रभु रहना सिखा देना, दया कर .....
4. वतन के वास्ते जीना, वतन के वास्ते मरना
वतन पर जाँ फिदा करना प्रभु हमको सिखा देना, दया कर .....

प्रार्थना -2

ए मालिक तेरे बन्दे हम, ऐसे हो हमारे कर्म, नेकी पर चले और बदी से टले
ताकि हँसते हुए निकले दम, ए मालिक .....
1. जब जुल्मों का हो सामना, तब तू ही हमें थामना, वो बुराई करे हम भलाई करे,
न हो बदले की ये भावना, बढ़ चले प्यार का हर कदम और मिटे बैर का हर भ्रम
नेकी पर .....
2. ये अंधेरा घना छा रहा, तेरा इन्सान घबरा रहा, हो रहा बेखबर, कुछ ना आता नजर
सुख का सूरज छिपा जा रहा, है तेरी रोशनी में वो दम, जो अमावस को कर दे पूनम
नेकी पर .....
3. बड़ा कमजोर है आदमी, अभी लाखों है इसमें कमी, पर तू जो खड़ा है दयालू बड़ा,
तेरी कृपा से धरती थमीं, दिया तूने हम जब जन्म, तू ही ले लेगा हम सब के गम
नेकी पर .....

राष्ट्रीय गान

(बुधवार व शनिवार अनिवार्य)

जन-गण-मन अधिनायक जय हे ! भारत भाग्य विधाता,
पंजाब-सिंध-गुजरात-मराठा-द्राविड़-उत्कल-बंग
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा उच्छल जलधि तंरग
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष माँगे,
गाहे तव जय-गाथा
जन-गण-मन अधिनायक जय हे ! भारत भाग्य विधाता,
जय हे, जय हे, जय हे, जय, जय, जय, जय हे!

राष्ट्रीय गीत

(अन्य दिनों में)

वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्
सुजलाम्, सुफलाम्, मलयज शीतलाम्
शस्य श्यामलम् मातरम्। वन्दे मातरम्
शुभ्र-ज्योत्सना पुलकित यामिनीम्
फुल्ल-कुसुमित-द्रुम दल शोभिनीम्
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्।
सुखदाम्, वरदाम् मातरम्।
वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम् ।।

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय गतिविधियाँ

1. स्नेह मिलन समारोह
2. सूक्ष्म शिक्षण
3. दैनिक पाठ योजना अभ्यास कार्यक्रम
4. वाद-विवाद एवं भाषण प्रतियोगिता
5. प्रसार-व्याख्यान
6. निबन्ध प्रतियोगिता
7. राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम
8. खेलकुद प्रतियोगिताएँ
9. साप्ताहिक प्रतियोगिताएँ
10. शैक्षिक भ्रमण
11. वार्षिक एवं पारितोषिक समारोह

नोट :- समय, आवश्यकता एवं व्यवस्था के अनुसार उपर्युक्त सभी गतिविधियाँ परिवर्तनीय है।

दैनिक गतिविधियाँ

1. प्रार्थना, श्लोक
2. गायत्री मन्त्र
3. ओम जाप
4. गुरू शब्द
5. प्रेरक वाक्य/सुविचार
6. दोहा वाचन
7. समाचार
8. राष्ट्रीय गान
9. राष्ट्रीय गीत
10. गौरव गान
11. प्रेरक, कहानी, घटना

चरित्र प्रमाण पत्र

महाविद्यालय में चरित्र प्रमाण-पत्र प्राप्त करने के लिए निर्धारित शुल्क चुकाना होगा। चरित्र प्रमाण-पत्र महाविद्यालय के निर्धारित प्रपत्र पर ही प्रदान किया जाएगा और किसी रूप में प्रदान नहीं किया जायेगा। चरित्र प्रमाण-पत्र पूरे सत्र में एक बार या महाविद्यालय छोड़ने के बाद ही प्रदान किया जावेगा।

गणवेश

ग्रीष्मकालीन गणवेश :-

- सोमवार, मंगलवार, गुरूवार, शुक्रवार को गुलाबी हल्के रंग की जोरजट की साड़ी व पूरी आस्तीन का ब्लाउज।
- बुधवार व शनिवार को गुलाबी रंग का कुर्ता व सफेद रंग की सलवार तथा सफेद शिफॉन की चुन्नी।

शीतकालीन गणवेश :-

- काले रंग की पूरी आस्तीन का प्लेन उनी कॉर्डिगन जिस पर किसी भी प्रकार की कढ़ाई न हो।

राष्ट्रीय पर्व व अन्य समारोहों के दिन प्राचार्य के निर्देशानुसार गणवेश निर्धारित होगा।

स्कूल इन्टर्नशिप - बी.एड प्रथम वर्ष 4 सप्ताह, बी.एड द्वितीय वर्ष 16 सप्ताह

शिक्षण विषय

हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, पंजाबी, गृहविज्ञान, इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, नागरिक शास्त्र, सामाजिक अध्ययन, चित्रकला, संगीत, गणित, सामान्य विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रयासन विज्ञान, कॉमर्स प्रेक्टिस, फाईनेंशियल एण्ड अकाउन्ट, बुक कीपिंग

पुस्तकालय

प्रत्येक छात्रा को पुस्तकालय के नियमों का पूर्णतः पालन करना होगा। यदि कोई छात्रा पुस्तकालय के नियमों की अवज्ञा करती पाई गयी तो उसके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी, जिसकी वह स्वंय जिम्मेवार होगी।

पुस्तकालय सम्बन्धी नियम

प्रत्येक छात्रा को एक पुस्तकालय कार्ड मिलेगा, जिस पर वे दो पुस्तकें ले सकती है।

- पन्द्रह दिवस के पश्चात् पुस्तक जमा न होने पर 1 रूपया प्रति दिवस के हिसाब से अर्थदण्ड देना होगा।
- प्रत्येक छात्रा को अपना परिचय पत्र सदैव अपने साथ रखना होगा।
- पुस्तकालय वातावरण को शान्त बनाये रखें।
- किसी भी नवीन पुस्तक को लेने हेतु पुस्तकालय अध्यक्ष से ही सम्पर्क करें।
- परिचय पत्र गुम हो जाने पर 25 रूपये अतिरिक्त शुल्क लगेगा।
- प्रत्येक छात्रा का यह कर्त्तव्य है कि महाविद्यालय एवं पुस्तकालय की स्वच्छता बनाये रखने में सहयोग करें।

सम्मान समारोह

कॉलेज में आयोजित विभिन्न गतिविधियाँ

कॉलेज में आयोजित विभिन्न गतिविधियाँ

कॉलेज में आयोजित विभिन्न गतिविधियाँ

कॉलेज में आयोजित विभिन्न गतिविधियाँ

स्व. बाबा राजकुमार जी बेदी

M.M.D BEBI WOMEN TT COLLEGE,
ANUPGARH
NAME OF PRINCIPAL
SMART
COOKIE